संस्कृत-साहित्य-सुधा

प्रधान सम्पादकः
डॉ मण्डन मिश्रः, निदेशकः

सम्पादकः
पं० श्री संपन्नारायणाचार्यः
न्यायमीमांसा, वेदान्त विद्वान्
उपनिदेशकः

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्
ए-40, विशाल इन्क्लेव, राजा गार्डन
नई दिल्ली-27

विषय-सूची

प्रथमो भागः (पद्य मन्दाकिनी)

1. ब्राह्मण किसे कहा जाए	1
2. बाली को तारा का हितपरिणामी वचन	11
3. परिव्रज्या के लिए सिद्धार्थ की मनोकामना	19
4. मनीषापञ्चक	25
5. चारुचर्या	31
6. अन्योक्तिकलाप	41
7. भारत-भू-मातृस्तोत्रम्	51

द्वितीयो भागः (गद्यमन्दाकिनी)

8. सुबुद्धि की कहानी	61
9. सचमुच सत्पुरुषों की बुद्धि भी दुर्जनों के कहने पर संदेह में पड़ जाती है	67
10. परस्पर विवाद करने वाले शत्रु भी हमारा हित करते हैं	73
11. अपनी मर्यादा के कारण ही सत्पुरुष आचरण की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते	77
12. पिता की मृत्यु पर श्रीहर्ष का शोक	89
13. अनर्थ की परम्परा	93
14. चन्द्रापीड को शुकनास का उपदेश	101

९ जो पहले गुस्से में आकर सुग्रीव तुम्हें युद्ध में ललकारता था और तुमने आक्रमण करके भगा दिया था एवं मार खाता हुआ वह भाग गया।

१० तुम्हारे द्वारा पराभूत एवं खूब व्यथित होकर गये हुए सुग्रीव का फिर से ललकारना मेरे मन में शङ्का उत्पन्न करता है।

११ गर्जना करते हुए उस सुग्रीव का जो घमंड और निश्चय दिख रहा है एवं उसकी गर्जना का जो आडंबर दिख रहा है वह किसी छोटे कारण से नहीं हो सकता है।

१२ यहाँ आये हुए उस सुग्रीव को मैं असहाय नहीं मानती। वह किसी की प्रबल सहायता लेकर आया है जिसके आधार पर यह (सुग्रीव) गर्जना करता है।

१३ यह वानर (सुग्रीव) स्वभाव से चतुर एवं बुद्धिमान् है। पराक्रम की परीक्षा किये बिना वह किसी से मैत्री नहीं करेगा।

१४ हे वीर ! पहले ही मैंने यह बात, कहते हुए कुमार अङ्गद के मुंह से सुनी है, तुम्हें मैं वह हितकारी बात कहूँगी।

१५ तुम्हारे भाई (सुग्रीव) का सहायक, रण में शूर एवं दुश्मनों के सैन्य को चूर-चूर कर देने वाला, प्रलयकाल के अन्त में उत्पन्न अग्नि की तरह राम एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति है।

१६ वह राम सज्जनों का निवास वृक्ष है (अर्थात् पेड़ जैसे अपनी छाया के द्वारा शीतलता प्रदान करता है वैसे ही राम सज्जनों को आनन्द देने वाला है), दुःखी जनों का सम्पूर्ण रक्षक, पीड़ितों का आश्रय-स्थान एवं यश का एकमात्र स्थान है।

१७ वह राम, पिता (दशरथ) का आज्ञा-पालक, ज्ञान एवं उसके प्रयोग में कुशल, धातुओं की खान हिमालय की तरह गुणों का आकर है।

१८ अपराजेय एवं कल्पनातीत रणकौशल वाले उस महात्मा राम से विरोध करना तुम्हारी शक्ति से बाहर है और ठीक नहीं है।